P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-8* (Part-1) April- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

अज्ञेय की कहानियाँ : पूर्वोत्तर का सन्दर्भ

गौतम सिंह राणा
सहायक अध्यापक,
शुभमाया सूर्यनारायण,
हाईस्कूल बागडोगरा,
दार्जिलिंग, पश्चिम बंगाल
भारत

सारांश

अज्ञेय राहों के अन्वेषी थे, उन्होंने हिंदी कविताई की तरह हिंदी कहानी को भी नया विषय व नई दृष्टि देने का महत्वपूर्ण कार्य किया था द्य इस क्रम में पूर्वोत्तर भारत की पृष्ठभूमि पर उनके द्वारा लिखित पाँच कहानियाँ दृ 'हीलीबोन की बत्तखें (1947)', 'मेजर चौधरी की वापसी (1947)' , 'नगा पर्वत की एक घटना (1950)' , 'जयदोल (1950)' एवं 'नीली हँसी (1954)' शिल्प व कथ्य दोनों ही दृष्टियों से काफी महत्वपूर्ण हैं।

'हीलीबोन की बत्तखें' मेघालय के खसिया समाज की सामाजिक संरचना को स्पष्ट करनेवाली व उसके ताने–बाने में फंसी नारी की संतानहीनता के मनोविज्ञान को बयां करनेवाली कहानी है। साथ ही साथ दूसरे विश्वयुद्ध के दौरान यहाँ तैनात ब्रिटिश सैनिकों के शोषण को भी बयां करनेवाली कहानी है। 'मेजर चौधरी की वापसी' मणिपुर की पृष्ठभूमि पर लिखित कहानी है। इसमें द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान पूर्वोत्तर भारत की सभ्यता–संस्कृति, जीवन–सम्बन्धों में युद्ध के कारण आई गिरावट का चित्रण मिलता है। नगा पर्वत की एक घटना' नागालैंड की पृष्ठभूमि पर लिखित कहानी है। इसमें सैनिक जीवन के अतिअनुशासनयुक्त होने से उनमें उत्पन्न मोराल जजमेंटलेसनेस के साथ–साथ वहाँ के अंगामी जनजाति के जीवन–शैली व उनकी समस्यायों का भी चित्रण मिलता है। 'जयदोल' व 'नीली हँसी' असम में प्रचलित लोकप्रिय जनश्रुतियों पर आधारित कहानियाँ हैं द्य 'जयदोल' में रानी जयमती के उत्सर्ग व बलिदान की कथा है और 'नीली हँसी' में देवकांत व नीलीमा की प्रेम कथा है। इन दोनों कहानियों में मूल कथा के बरक्स असमिया समाज के विभिन्न पहलुओं का भी चित्रण मिलता है।

पूर्वोत्तर प्रदेश आजादी के पहले भारतीय मुल खंड की संवेदनाओं से उतनी मजबूती से जुड़ा हुआ नहीं था , जितनी की होनी चाहिए थी द्य भले ही आजादी के बाद इसे जोड़ने के अनेक सरकारी प्रयास किये गये पर वे प्रयाप्त नहीं रहे हैं अतः वस्तुस्थिति जस की तस अब भी बनी हुई है। अतः इस स्थिति में आज भी अज्ञेय की पूर्वोत्तर संदर्भित कहानियों का अनुशीलन काफी महत्वपूर्ण हो उठता है क्योंकि अज्ञेय की ये कहानियाँ इस क्षेत्र की संवेदनाओं से जुड़ने के लिए पाठको का आह्वान करती हैं।

मुख्य शब्द : अज्ञेय, संदर्भित कहानियाँ।

प्रस्तावना

अज्ञेय 'राहों के अन्वेषी' थे। छायावाद के बाद हिंदी कविताई के क्षेत्र में जिस नवीनता और बदलाव की जरूरत थी, उसे सबसे पहले उन्होंने ही समझा और उसके अनुरूप अपनी रचनाओं को गढ़ा भी था। हिंदी कहानी के क्षेत्र में भी उन्होंने यही काम किया था। उन्होंने प्रेमचंदयुगीन कहानियों में व्याप्त सामाजिक सरोकारों को सर्वथा नवीन दिशा की ओर मोड़ते हुए मानव–मन की अतल गहराईयों में पहुँचाने का काम किया था। उन्होंने हिंदी कहानी को केवल नई दृ ष्टि ही नहीं दी , बल्कि उसे नई भावभूमि भी प्रदान की। नया विषय देने के क्रम में उन्होंने अपनी कहानियों में उन सन्दर्भो को भी उठाया, जिन पर उनके समकालीनों का ध्यान ही नहीं गया। उनकी कहानियों में उठाया गया पूर्वोत्तर का सन्दर्भ ऐसा ही एक सन्दर्भ है ।

'पूर्वोत्तर' कहने का तात्पर्य 'पूर्वोत्तर भारत' है; जो चीन, वर्मा, नेपाल, भूटान और बांग्लादेश की सीमाओं को छूता हुआ हिमालय की पट्टी पर बसे आठ राज्यों – सिक्किम, असम, मेघालय, मणिपुर, मिजोरम, अरुणाचल प्रदेश, नागालैंड और त्रिपुरा का क्षेत्र है। भारत को पूर्व एशिया और दक्षिण पूर्व एशिया से जोड़नेवाला भूभाग होने के कारण बहुलता व वैविध्यपरक सभ्यता–संस्कृति इस क्षेत्र की अपनी पहचान है। इसकी इस विशेषता के सन्दर्भ में डॉ. रीतारानी पालीवाल कहती हैं – " यह भारत को पूर्व एशिया और दक्षिण पूर्व एशिया से जोड़नेवाला भूभाग है। इस कारण यहाँ की सभ्यता–संस्कृति प्राचीनकाल से ही

बहुलतापरक और वैविध्यपरक रही है, जिसे कई बार संस्कृतियों के मेल के रूप में और कई बार भिन्नता के रूप में पहचाना जाता रहा है। बौद्ध, वैष्णव और शाक्त परम्पराओं के साथ यहाँ स्थानीय जनजातीय सांस्कृतिक परम्पराएँ भी रही हैं; जिनकी थोड़ी–थोड़ी दूरी के फासले पर ही अलग–अलग निजी अस्मिता है, भाषा है, मौखिक परम्परा है।" [1]

हिंदी साहित्य में इस क्षेत्र को उसके निछक रूप में प्रस्तुत करनेवाले सबसे पहले कहानीकार अज्ञेय जी थे। अज्ञेय जी सन् 1943 से 1946 के बीच अंग्रेजी सेना की नौकरी से जुड़े थे क्योंकि वे दूसरे विश्वयुद्धके दौरान फासीवादी शक्तियों का विरोध 'मनसा–वाचा–कर्मणा' सदृश करना चाहते थे। इसी उद्धेश्य से वे ब्रिटिश सेना में इनफॉर्मर की नौकरी से जुड़े। नौकरी के दौरान उनका ज्यादा समय पूर्वोत्तर में ही बीता। इस दौरान उन्होंने इन क्षेत्रों को काफी करीब से देखा। चूँकि नौकरी करने व इन प्रदेशों को देखने के क्रम में वे इन प्रदेशों की संवेदनाओं से जुड़ते चले गये , यही कारण है कि आगे चलकर इसका प्रतिफलन उनकी कहानियों व यात्रा वृत्तातों में देखने को मिलता है। पूर्वोत्तर के लोगों के जीवन, समाज , संस्कृति , परंपरा और उनकी मानसिकताओं को चित्रित करनेवाली रचनाओं में उनके द्वारा लिखित पाँच कहानियाँ – 'हीलीबोन की बत्तखें, 'मेजर चौधरी की वापसी', 'जयदोल', 'नगा पर्वत की एक घटना', व 'नीली हँसी' और तीन यात्रा वृत्तांत – 'परशुराम से तुरखम', 'माझुली' व 'बहता पानी निर्मला' विशेष उल्लेखनीय हैं। इनमें से उक्त चर्चित पाँच कहानियों को अज्ञेय ने अपनी तीसरी खेप की कहानियों के रूप में चिन्हित किया है और उनके विषय वस्तु के सन्दर्भ में स्वयं भी कहा है – " तीसरी खेप की कहानियाँ सैनिक जीवन से और उन प्रदेशों के जीवन , समाज अथवा इतिहास से जिनमें सैनिक जीवन बिताया , घनिष्ठ रूप से संबद्ध हैं।" [2]

अज्ञेय कृत 'हीलीबोन की बत्तखें' पूर्वोत्तर राज्य मेघालय की पृष्ठभूमि पर लिखित एक महत्वपुर्ण कहानी है। पूर्वोत्तर के संदर्भ से जुड़ी इस कहानी के तीन पक्ष हैं। इसका पहला पक्ष यह है कि इस कहानी के माध्यम से अज्ञेय ने मेघालय में बसे खसिया समाज के स्त्री–प्रधान जाति–संगठन, सामाजिक सत्ता में उसका अनुशासन, परिवार के सबसे छोटी लड़की को उत्तराधिकार का नियम, खासिया घरों की बनावट, उनकी प्रकृति उपासना व उनकी मानवेतर प्राणियों के प्रति संवेदना आदि जैसी पूर्वोत्तर जीवन की अनेक बारीकियों से परिचय करवाया है। इस सन्दर्भ में कहानी की मुख्य पात्रा हीलीबोन यिर्वा का परिचय वाला प्रसंग द्रष्टव्य है – " हीली के पिता उस छोटे से माण्डलिक राज्य के दीवान रहे थे। हीली तीन संतानों में सबसे बड़ी थी और अपने दोनों बहनों की अपेक्षा अधिक सुंदर भी। खसियों का जाति–संगठन स्त्री–प्रधान है; सामाजिक सत्ता स्त्रियों के हाथ में है और वह अनुशासन में चलती नहीं, अनुशासन को चलाती हैं।" 3 इसका दूसरा पक्ष यह है कि इस कहानी में लोकेल के चित्रण के साथ ही साथ कहानीकार ने दूसरे विश्वयुद्धके दौरान वहाँ की जनजातीय स्त्री–जीवन में आई अस्मिताई ह्रास और उससे उनमें उत्पन्न टीस को भी स्थान दिया है। दूसरे विश्वयुद्ध के दौरान इन क्षेत्रों में तैनात ब्रिटिश सेना ने जापानी सेना की देखा–देखी यहाँ की महिलाओं को कम्फर्ट वूमन के तौर पर भरपूर उपयोग किया था। हालाँकि इस प्रकरण में वहाँ की नारी की लिप्तता में उनकी अपनी मज़बूरी और अपनी आकांक्षा का भी योग था। इसके बावजूद इस प्रकरण के कारण वहाँ एक पराया व दूषित तनाव उभर आया था, जिसका चित्रण करते हुए कहानीकार कहते हैं – " युद्ध की अशांति के इन तीन–चार वर्षों में कितने ही अपरिचित चेहरे दिखे थे, अनोखे रूप, उल्लसित, उच्छ्वसित, लोलुप, गर्वित, याचक, पाप–संकुचित, दर्पस्फित मुद्राएँ...और वह(हीली) जानती थी कि इन चेहरों और मुद्राओं के साथ उसके गाँव की कई स्त्रियों के सुख–दुःख, तृप्ति और अशांति, वासना और वेदना, आकांक्षा और संताप उलझ गये थे, यहाँ तक कि वहाँ के वातावरण में एक पराया और दूषित तनाव आ गया था।"[4] कहानी के पात्र कैप्टन दयाल की आत्मस्वीकारोक्ति ,"नीचे वालों ने हमेशा पहाड़ वालों के साथ अन्याय ही किया है।"[5] भी पूर्वोत्तर के लोगों का ब्रिटिश सेना(जिसमें अधिकांश भारतीय थे) द्वारा किये गये शोषण को ही बयां करता है। उक्त दोनों पक्षों के अतिरिक्त इस कहानी का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष है – इसमें निहित नारी मनोविज्ञान का संदर्भ। ऐसा कहा जाता है कि स्त्री भले ही अविवाहित रह जाए पर उसे संतानहीनता का दुःख सालता ही है। हीली की यही स्थिति है। वह भले अपनी दोनों बहनों का विवाह करवा चुकी है और दायित्वों के निर्वहन में बहुत अधिक समय पार होने के कारण वह उसकी अपने विवाह की उम्र पार कर चुकी है पर जब वह कैप्टन दयाल द्वारा मारा गया नर–लोमड़ी के शव से चिपके उसकी मादा–लोमड़ी व तीन शावकों को देखती है तो खुद को इस अपराध से पूर्णतः दबी पाती है क्योंकि उसके आग्रह पर ही कैप्टन दयाल नर–लोमड़ी को मार देता है। इस अपराध–बोझ से वह इतनी असहज हो जाती है कि जब तक वह घर लौटकर इस हत्या के कारणरूप में उपस्थित अपने प्राण से प्रिय ग्यारह बत्तखों को मार नहीं देती है, तब तक वह राहत महसूस नहीं कर पाती है। इस पक्ष की उपस्थिति के कारण ही गोपाल राय ने इसे एक अच्छी कहानी कहा है – " 'हीलीबोन की बत्तखें' एक अच्छी कहानी इसलिए है क्योंकि उसकी पृष्ठभूमि सैनिक जीवन की होने पर भी उसमें अंकित संवेदना स्त्री की संतानहीनता की मनोवैज्ञानिक स्थिति से संबद्ध है।"[6]

'मेजर चौधरी की वापसी' द्वितीय विश्वयुद्धके दौरान पूर्वोत्तर भारत की जिस भूमि पर युद्ध लड़ा गया, उसकी सभ्यता–संस्कृति ,जीवन–सम्बन्धों में युद्ध के कारण आई गिरावट को दर्ज करनेवाली एक महत्वपूर्ण कहानी है। यह पूर्वोत्तर राज्य मणिपुर की पृष्ठभूमि पर लिखी गई है। इस बात को नकारा नहीं जा सकता है कि युद्ध चाहे जहाँ भी लड़ा जाए, उसके विनाश की सबसे अधिक गहराई तक शिकार औरतें ही होती हैं। द्वितीय विश्वयुद्धके दौरान मणिपुर में भी यही हुआ। युद्ध के दौरान वहाँ तैनात ब्रिटिश सैनिकों ने वहाँ की औरतों का कम्फर्ट वूमन के तौर पर उपयोग खूब किया, जिसकी अनदेखी सेना के अधिकारी व तत्कालीन सत्ता ने भी किया। सेना में कार्यरत अज्ञेय जी ने इस प्रकरण की

भली–भाँति नोटिस ली और सेवानिवृत्त होकर इसे अपनी कहानी के मार्फत अभिव्यक्त किया। अज्ञेय ने प्रस्तुत कहानी के मार्फत सीमा क्षेत्र के इन इलाकों में सैनिकों द्वारा इस तरह के नारी–शोषण एवं अपमान के तथ्य को दोनों पक्षों – सनिकों के पक्ष और उन्हें सजा देने में सक्षम कप्तान–मेजर जैसे अधिकारियों के पक्ष से प्रस्तुत किया है। स्त्रियों के शोषण के सन्दर्भ में कहानी के पात्र मेजर चौधरी का प्रस्तुत कथन द्रष्टव्य है–" उस दिन मैं अधिक देर करके जा रहा था। आधी रात होगी, गश्त पर जाते हुए उसी जगह के आस–पास मैंने एक चीख सुनी। गाड़ी रोककर मैंने बत्ती बुझा दी और टार्च लेकर एक पुलिया की ओर गया जिधर से आवाज आई थी मेरा अनुमान ठीक ही था; पुलिया के नीचे एक पहाड़ी औरत गुस्से से भरी खड़ी थी और कुछ दूर पर एक अस्त–व्यस्त गोरा फौजी, जिसकी टोपी और पेटी जमीन पर पड़ी थी और बुशर्ट हाथ में।"[7] सबसे अधिक ध्यान देनेवाली बात यह है कि इस अमानवीय कृत्य को रोक सकनेवाली तात्कालीन शक्ति और सत्ता दोनों इसे नजरअंदाज करते हैं। इस तरह के कृत्य से जुड़े सैनिकों को दंड देने के बजाय शक्ति और सत्ता निष्क्रिय बने रहते हैं। कहानी में इस सन्दर्भ की पुष्टि तब होती है ; जब अज्ञेय जी मेजर चौधरी से कहते है –" हूँ। मैंने तो सुना है कि यथासंभव अनदेखी की जाती है ऐसी बातों की। बल्कि कोई वैश्यालय में पकड़ा जाये और उसकी पेशी हो तो असली अपराध के लिए नहीं होती, वरदी ठीक न पहनने या अफसर की अवज्ञा या ऐसे ही किसी जुर्म के लिए होती है।"[8] और इस पर प्रतिक्रिया देते हुए मेजर चौधरी कहते हैं– " ठीक ही सुना है तुमने। असली अपराध के लिए ही हुआ करे तो अव्वल चालान इतने हों कि सेना बदनाम हो जाये ; इससे उसका असर फौजियों पर तो उल्टा पड़े। उनका दीमाग हर वक्त उधर जाया करे।"[9]

'जयदोल' असम की 'मलिता जयमती' जनश्रुति पर आधारित एक महत्वपूर्ण कहानी है। पूर्वोत्तर राज्य असम में इतिहास–कल्पना मिश्रित लोक गीतों को मलिता कहा जाता है। ये मूलतः चरित्र–प्रधान गीत होते हैं। इनमें असम के 600 वर्षीय अहोम राजाओं के काल का जनश्रुतिपरक इतिहास दर्ज मिलता है। इन मलिताओं में 'मलिता जयमती' सबसे लोकप्रिय व सर्वाधिक गाई जानेवाली मलिता है। इस असमिया मलिता के अनुसार असम में छ सौ वर्ष तक राज करनेवाले अहोम राजाओं में सबसे निरंकुश राजा चूलिकफा था। वह अपने जीवन काल में निष्कंटक राज्य करना चाहता था। अहोम राज्य के परम्परागत नियमानुसार राजा में किसी भी प्रकार की अंग विकृति वर्जित था क्योंकि उनके अनुसार राजा में साक्षात ईश्वर का अंश होता है अतः उसका शरीर क्षत नहीं हो सकता। इसी नियम को ध्यान में रखकर चूलिकफा राज्य के समस्त युवाओं व कुमारों का अंग विक्षत करवा रहा था। इसी क्रम में वह राजसत्ता का सर्वश्रेष्ठ उत्तराधिकारी कुमार गदापाणी को पकड़कर उसका अंग विक्षत करना चाहता था। कुमार गदापाणी जयमती का पति था और वह राजा के इस मंशा को समझ चुका था। इस कारण वह पड़ोस के नगा राज्य की ओर पलायन कर चुका था। राजा द्वारा जयमती को अमानवीय यातना देकर उसके पति का पता जानने की कोशिश की गई। यातनाओं को सहते हुए जयमती अपने प्राण त्याग दी पर उसने अपने समुदाय की भलाई व स्वर्णिम भविष्य को देखते हुए अपने पति का पता नहीं बताया। माना जाता है कि जयसागर नामक झील के किनारे ही यह घटना घटी थी। यही कारण है कि आज भी यह झील इस प्रसंग का गवाह व रानी की वीरता के कारण स्तुत्य स्थान बना हुआ है। अज्ञेय यायावरी वृत्ति के होने के साथ–साथ एक संवेदनशील कथाकार थे। उन्होंने उत्तर–पूर्व के राज्यों के भ्रमण के दौरान वहाँ के मिथकों, जनश्रुतियों, दंतकथाओं को भी आत्मसात किया था। प्रस्तुत कहानी उनकी इसी विशिष्टता को बयां करता है। अज्ञेय ने इस 'मलिता जयमती' जनश्रुति को पाठको के समक्ष प्रस्तुत करने के लिए अपनी इस कहानी के शिल्प को इस प्रकार गढ़ा है कि मूल कहानी का पात्र जनश्रुति काल और मूल कहानी के काल के बीच आवाजाही करने लगता है। मूल कहानी का पात्र लेफ्टिनेंट सागर आगे बढ़ते हुए जैसे ही जयसागर झील तक पहुँचता है; वैसे ही कहानीकार उसे जनश्रुति काल की कहानी में एक दर्शक के रूप में प्रवेश करवा देते हैं, जो रानी को दिये जा रहे अमानवीय यातना का विरोध कर उससे युद्ध करनेवाले कुमार गदापाणी को परास्त होते देख चूलिकफा पर गोली दाग देता है– "लेफ्टिनेंट सागर ने वहीं पड़े–पड़े कमर से रिवाल्वर खिंचा और शिस्त लेकर दाग दिया ....धांय !"[10] उसके बाद कहानी का पात्र उस जनश्रुति काल से निकलकर पुनः अपने कहानी–काल में वापस लौट आता है।

'नगा पर्वत की एक घटना' मूलतः फौजी जीवन के अतिअनुशासनात्मक होने से उनमें उत्पन्न मोराल जजमेंटलेसनेस के कारण हुए अमानवीय कृत्य की पृष्ठभूमि पर आधारित एक महत्वपूर्ण कहानी है। महत्वपूर्ण इस मायने में है कि इसमें अज्ञेय ने फौजी जीवन के मोराल जजमेंटलेसनेस के कारण हुए अमानवीय कृत्य के चित्रण के सामानांतर नागालैंड राज्य के कोहिमा से उत्तर तेर्हेमत्सेमिन्यु इलाके में रहनेवाले अंगामी जनजाति की जीवन–शैली, समस्यायों व वहाँ तैनात ब्रिटिश व अमरीकी सैनिकों(टामियों) द्वारा उनपर हुए शोषण व चालाकी से किये गये दोहन का भी चित्रण किया है। इस क्षेत्र में द्वितीय विश्वयुद्धके दौरान आत्मसमर्पण करनेवाले 200 जापानी सैनिकों पर मोराल जजमेंटलेसनेस के कारण ब्रिटिश सैनिकों(टामियों) द्वारा की गई निर्मम हत्या कहानी की मूल घटना है ; जिसे कहानीकार एक घोर अमानवीय कृत्य के रूप में देखता है। इस सन्दर्भ में कहानी के पात्र मेजर वर्धन का कथन द्रष्टव्य है – "अगर इस तरह से गोली दाग देने को आप उस लेबिल(यांत्रिक कर्म) पर ले जा रहे हैं, तब तो मुझसे भी आगे जा रहे हैं....मुझे कुछ और कहना ही नहीं हैं। फौजी जीवन में आदमी विवेक छोडकर अनुशासन के सहारे चलता है और युद्ध का दबाव उसे अनुशासन से भी परे ले जाता है।"[11] इस मूल घटना के समानांतर अज्ञेय ने इस कृषिविहीन क्षेत्र में कंद–मूल पर आश्रित कठीन जीवन जीनेवाले अंगामी जनजाति के लोगों की वीरता और जाँबाजपन का वर्णन भी किया है। साथ ही कहानीकार ने इस तथ्य को भी

उद्घाटित किया है कि द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान किस प्रकार बड़ी चालाकी से जापानी सैनिकों के प्रति अंगामियों में निहित रोष का फायदा ब्रिटिश सैनिकों ने उठाया था। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान जापानी सेना ने इस क्षेत्र में प्रवेश कर अंगामियों के घर जलाये थे। उनकी औरतों का शोषण किया था। इससे अंगामी लोग जापानियों से बड़े रुष्ट थे। इस रोष का फायदा उठाते हुए ब्रिटिश फ़ौज ने इन अंगामियों को जापानियों का दमन करनेवाली टीमों में शामिल कर उन्हें सबसे आगे की पाँत में रखते थे ताकि जीवन–हानि का मामला आये तो सबसे पहले इसका शिकार वे ही हों और यदि जापानी इनके चपेट में आये तो अंगामियों द्वारा उनका आसानी से खात्मा भी हो जाए। इस सन्दर्भ में जापानी सनिकों के घेरेबंदी के लिए मेजर वर्धन द्वारा बनाई गई योजना से सम्बन्धित यह कथन द्रष्टव्य है– " अब अगर 33 डिव कोहिमा के पूरब जसामी वाली सडक से आगे बढ़ेगा तो बीच के इलाके का महत्त्व भी नहीं; जापानी या तो पीछे हटेगा या बीच में फंस जायेगा, और अंगामी फिर किसीको छोड़ने के नहीं–एक तो यों ही वे परदेशी को धंसने नहीं देते, फिर जिसने उनके घर जलाये हों, खलियान लुटे हों, औरतों को बेइज्जत किया हो उनको तो वह भूनकर खा जायेंगे।"[12]

'नीली हँसी' असम प्रान्त की लोककथा पर ही आधारित एक प्रेम कहानी है। इस कहानी की पृष्ठभूमि निम्न असम का एक द्वीपीय क्षेत्र है; जहाँ ब्रह्मपुत्र नदी में प्रतिवर्ष आनेवाली बाढ़ उसके जीव–घनत्व को घटाती रहती है। इस कहानी की विशेषता यह है कि अज्ञेय ने इस कहानी में प्रेम कथा बताने के बरक्स इसमें इस द्वीप के लोगों के जीवन को भी चित्रित किया है। इस कहानी में बाढ़ के दिनों में द्वीप के लोगों द्वारा अपने जीवन–रक्षा के लिए जो उपाय किये जाते हैं ; उसे बयां करते हुए कहानीकार कहते हैं –" बाढ़ आती है तो द्वीप में पानी भर आता है, उतरती है तो जगह–जगह खाल–बील–दिग्घी, ताल बनाकर छोड़ जाती है। निर्धन लोग बचने के लिए पेड़ों पर मचान बनाते हैं, संपन्न दो–एक व्यक्तियों ने बजर रख छोड़े हैं, पानी उतर जाने पर किसी खाल–पोखर में खड़े रहते हैं। साधारण बाढ़ में यही जीवन–रक्षा के लिए यथेष्ठ होते हैं। अधिक बाढ़ में उनका भी ठिकाना नहीं–"[13] प्रतिवर्ष हो रहे जीवन–मृत्यु के संघर्ष की इसी भूमि में सींचित देवकांत और नीलिमा के प्रेम का चित्रण इस कहानी का मूल विषय है। देवकांत और नीलिमा एक दुसरे को प्रेम करते हैं पर देवकांत को अपनी पढ़ाई पूरी करने व जीवन में कुछ बनने के लिए डिब्रूगढ़ जाना पड़ता है। पढ़ाई पूरी करने पर उसे वहीं के एक स्कूल में नौकरी मिल जाती है। इस बीच उसके पास नीलिमा की चिट्ठी आती है कि वह द्वीप आकर उसके प्राणों से प्रिय मोहन(मृगशावक) को लेकर जाये क्योंकि वे लोग द्वीप छोडकर निकल रहे हैं और उसे आशंका है किसी किसी दिन बाढ़ उसके साथ मोहन को भी लील न जाये। देवकांत बाढ़ की स्थिति में ही द्वीप जाता है। वहाँ वह मोहन को तो पाता है पर नीलिमा का कोई पता नहीं चल पाता। वह मोहन को एक नाव में लेकर नीलिमा की तलाश में निकलता है और बाढ़ की चपेट में आकर मुर्छित हो जाता है। मुर्छित होने से पहले ही वह मोहन को अपने हाथ के कठैठे पर रख देता है ताकि वह बच सके और होता भी यही है। मोहन को बचाना उसे अपने हृदय में फैली प्रेम–बेली को बचाने के सदृश लगता है क्योंकि नीलिमा को उससे हमेशा आग्रह रहा है कि देवकांत उसके द्वारा दिये गये चीजों को जरुर बचाकर रक्खे। नीलिमा के आग्रह को पूरा कर पाने के कारण वह मूर्छावस्था में भी मुस्कुराता है और जब उसे लगता है कि इस स्थिति पर नीलिमा उसे कह रही हो–"पागल। बेहोशी में हँसता है।"[14] तो वह प्रत्युत्तर में उसे कहता है – " हाँ , तो हँसता तो है , नीली हँसी – संपृक्त हँसी – वह हँसी जो नीली थी – उसकी नीलिमा ! "[15]

अध्ययन का उद्देश्य

इस शोध पत्र के लेखन का मूल उद्धेश्य अज्ञेय की पूर्वोत्तर संदर्भित कहानियों के अनुशीलन के मार्फत भारत के मूल खण्ड से अलग–थलग पड़े पूर्वोत्तर भारत की संवेदनाओं से शेष भारत को जोड़ने की आवश्यकता को रेखांकित करना है क्योंकि आज़ादी से पहले अज्ञेय ने अपनी कहानियों, यात्रा–वृतांतों के लेखन के माध्यम से इस दिशा में जो महत्वपूर्ण तथा सार्थक प्रयास किया था वैसा सरकारी तथा साहित्यिक प्रयास आज़ादी के बाद से लेकर अब तक हो तो रहे हैं पर इस दिशा में और भी अधिक गतिशीलता अपेक्षित है

निष्कर्ष

इस प्रकार यह निःसंदेह कहा जा सकता है कि उपरोक्त कहानियों के लेखन के मार्फत अज्ञेय ने अपने समय में देश के मुख्य धारा के लोगों तथा पूर्वोत्तर के जनजातीय लोगों के बीच सार्थक संवाद स्थापित करने का महत्वपूर्ण कार्य किया था। संवाद स्थापन का यह कार्य उन्होंने साहित्यिक जगत में कोई हलचल मचाने के उद्धेश्य से नहीं किया था बल्कि अलग–थलग व अपरिचित रूप में पड़े होने के साथ–साथ अपनी अस्मिताई संकट से जूझ रहे पूर्वोत्तर के लोगों की संवेदनाओं को देश की मूल धारा के लोगों से जोड़ने के लिए किया था ताकि एक मुकम्मल भारत की तस्वीर सबके समक्ष प्रस्तुत की जा सके। यही कारण है कि एक साहित्यकार के तौर पर अज्ञेय द्वारा किये गये इस महत्वपूर्ण कार्य की विशेषता पर टिपण्णी करते हुए डॉ. रीतारानी पालीवाल ने कहा है – " ध्यान देने की बात है कि अज्ञेय एक विकसित अथवा उन्नत समाज के सदस्य के रूप में वनवासियों/आदिवासियों को उन्नत बनाने का दावा करने की हैसियत से नहीं वरन् संवेदनशील सह अनुभुतिपूर्ण रचनाकार के रूप में उनके बीच मौजूद होते हैं ; उनके विषय में जानने के इक्षुक होकर। वे उन्हें, 'अन्य' के रूप में देखने की बजाय 'स्व' के अंग के रूप में देखने–दिखाने का प्रयास करते हैं। उनकी संवेदना का यह विस्तार हमसे अपेक्षा करता है कि हम भी उसमे सहभागी हों।"[16]

पाद टिप्पणी

1. *पालीवाल(सं), डॉ. रीतारानी,अज्ञेय और पूर्वोत्तर भारत, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण:2011, पृष्ठ–9*
2. *अज्ञेय, 'अज्ञेय':सम्पूर्ण कहानियाँ, राजपाल एंड संज, कश्मीरी गेट, दिल्ली, संस्करण:2014, पृष्ठ–21*

3. *अज्ञेय, 'अज्ञेय':सम्पूर्ण कहानियाँ, राजपाल एंड संज, कश्मीरी गेट, दिल्ली, संस्करण:2014, पृष्ठ–538*
4. *अज्ञेय, 'अज्ञेय':सम्पूर्ण कहानियाँ, राजपाल एंड संज, कश्मीरी गेट, दिल्ली, संस्करण:2014, पृष्ठ–539*
5. *अज्ञेय, 'अज्ञेय':सम्पूर्ण कहानियाँ, राजपाल एंड संज, कश्मीरी गेट, दिल्ली, संस्करण:2014, पृष्ठ–540*
6. *राय, गोपाल, अज्ञेय और उनका कथा साहित्य, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण:2010, पृष्ठ–207*
7. *अज्ञेय, 'अज्ञेय':सम्पूर्ण कहानियाँ, राजपाल एंड संज, कश्मीरी गेट, दिल्ली, संस्करण:2014, पृष्ठ–546*
8. *अज्ञेय, 'अज्ञेय':सम्पूर्ण कहानियाँ, राजपाल एंड संज, कश्मीरी गेट, दिल्ली, संस्करण:2014, पृष्ठ–545*
9. *अज्ञेय, 'अज्ञेय':सम्पूर्ण कहानियाँ, राजपाल एंड संज, कश्मीरी गेट, दिल्ली, संस्करण:2014, पृष्ठ–546*
10. *अज्ञेय, 'अज्ञेय':सम्पूर्ण कहानियाँ, राजपाल एंड संज, कश्मीरी गेट, दिल्ली, संस्करण:2014, पृष्ठ–513*
11. *अज्ञेय, 'अज्ञेय':सम्पूर्ण कहानियाँ, राजपाल एंड संज, कश्मीरी गेट, दिल्ली, संस्करण:2014, पृष्ठ–560*
12. *अज्ञेय, 'अज्ञेय':सम्पूर्ण कहानियाँ, राजपाल एंड संज, कश्मीरी गेट, दिल्ली, संस्करण:2014, पृष्ठ–557*
13. *अज्ञेय, 'अज्ञेय':सम्पूर्ण कहानियाँ, राजपाल एंड संज, कश्मीरी गेट, दिल्ली, संस्करण:2014, पृष्ठ–523*
14. *अज्ञेय, 'अज्ञेय':सम्पूर्ण कहानियाँ, राजपाल एंड संज, कश्मीरी गेट, दिल्ली, संस्करण:2014, पृष्ठ–528*
15. *अज्ञेय, 'अज्ञेय':सम्पूर्ण कहानियाँ, राजपाल एंड संज, कश्मीरी गेट, दिल्ली, संस्करण:2014, पृष्ठ–528*
16. *पालीवाल (सं), डॉ. रीतारानी,अज्ञेय और पूर्वोत्तर भारत, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण: 2011, पृष्ठ–25।*